एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

टोसा जूट में किस्म एवं उर्वरक का प्रभाव: अधिक उपज और अधिक कमाई के लिए

*आराधना लकड़ा
एम.एस.सी. (कृषि विज्ञान), इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.), भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: aaradhanalakra1812@gmail.com

टोसा जूट (*कोरकोरस ओलिटोरियस* एल.) को 'स्वर्णिम रेशा' कहा जाता है। यह भारत की सबसे महत्वपूर्ण बास्ट रेशा फसल है। छत्तीसगढ़ में भी इसकी खेती की संभावना है। सही किस्म और संतुलित खाद ही इसकी अच्छी उपज का आधार है। इसी को देखने के लिए इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के अनुसंधान प्रक्षेत्र में खरीफ 2021 में एक वर्षीय प्रयोग किया गया।


चित्र 1: जूट की खेती

प्रयोग विधि एवं सामग्री

इस प्रयोग में जूट की दो उन्नत किस्मों - जे.आर.ओ. 204 और जे.आर.ओ. 2407 का परीक्षण किया गया। साथ ही खाद की अलग-अलग मात्राओं - बिना खाद से लेकर 120:90:70 किग्रा नाइट्रोजन : फॉस्फोरस : पोटाश प्रति हेक्टेयर तक का परीक्षण किया गया।

परिणाम

1.उन्नत किस्म का उपज पर प्रभाव: इस प्रयोग में जे.आर.ओ. 2407 किस्म जे.आर.ओ. 204 की तुलना में बेहतर पाई गई। इसमें पौधे की ऊँचाई, रेशा की लंबाई और रेशा उपज अधिक पाई गई। जे.आर.ओ. 2407 से जे.आर.ओ. 204 की तुलना में लगभग 28% अधिक रेशा उपज प्राप्त हुई। यह परिणाम केवल इस एक वर्षीय प्रयोग पर आधारित है।

2.संतुलित उर्वरक का उपज पर प्रभाव: बिना खाद वाली फसल में उपज आधी से भी कम पाई गई। जैसे-जैसे खाद की मात्रा बढ़ाई गई, उपज भी बढ़ती गई। सबसे अधिक उपज 120:90:70 किग्रा खाद पर पाई गई, परन्तु वह 100:80:60 किग्रा खाद के लगभग बराबर ही थी।

आर्थिक विश्लेषण: किस संयोजन में हुई अधिक कमाई?

अर्थशास्त्र के विश्लेषण में भी इस प्रयोग में जे.आर.ओ. 2407 किस्म से अधिक शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। लागत के हिसाब से जे.आर.ओ. 2407 + 100:80:60 किग्रा खाद का संयोजन अधिक लाभदायक पाया गया, क्योंकि इसमें थोड़ी कम खाद में लगभग बराबर उपज मिली। वहीं बिना खाद वाली जे.आर.ओ. 204 में सबसे कम लाभ पाया गया।

निष्कर्ष एवं किसानों के लिए सलाह

इस एक वर्षीय प्रयोग के आधार पर कहा जा सकता है कि जे.आर.ओ. 2407 किस्म के साथ 100:80:60 किग्रा नाइट्रोजन : फॉस्फोरस : पोटाश प्रति हेक्टेयर का प्रयोग लाभदायक पाया गया। किसान भाइयों को सलाह है कि वे अपने क्षेत्र में मिट्टी परीक्षण के आधार पर ही खाद का प्रयोग करें और किसी भी नई किस्म को अपनाने से पहले अपने क्षेत्र में उसका परीक्षण अवश्य करें।

~****~